शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 93-101

भूपेन हाजरिका एवं नागार्जुन के गीतों एवं कविताओं में अनुगुंजित समाज

✍ तैयबुन नेशा

शोध-सार :

साहित्यकार के हृदयस्थल एवं मनोभाव के परिणाम स्वरूप साहित्य का सृजन हुआ है। साहित्यकार समाज की तमाम गतिविधियों को बड़ी सतर्कतापूर्वक सुनता है, देखता है, समझता है और आनेवाली पीढ़ी को समझाने की प्रेरणा देता है। असमीया साहित्य एवं संस्कृति के धरोहर डॉ. भूपेन हाजरिका और हिंदी साहित्य के आधुनिकता बोध के प्रगतिशील विचारधारा के उज्ज्वल नक्षत्र बाबा नागार्जुन के मानव-कल्याण, मानव-प्रेम, सहानुभूति एवं मानवता का कलात्मक स्वर संपूर्ण जनमानस के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दिव्य मंत्र से ओतप्रोत है।

डॉ. भूपेन हाजरिका अपने परिवर्तनकारी विचारों पर पूर्णत: आश्वस्त थे, क्योंकि उन्हें यकीन था कि हथियारों विहीन आवाजों, विचारों एवं शांति की यह लड़ाई अंत तक समाज में व्याप्त विविध विसंगतियों को मिटाकर मानवता की प्रतिष्ठा कर सकती है। इसलिए उन्होंने विचारों में बदलाव एवं मानवीय चेतना को जागृत करने हेतु जो उदात्त कंठ से मुक्ति-आकांक्षी जनता को न्योता देने का संकल्प लिया, वह परिवर्तन की दिशा में पहली सीढ़ी थी।

बीज शब्द : *भूपेन हाजरिका, नागार्जुन, मानवता।*

1. प्रस्तावना :

साहित्य-सृजन के आधार-स्थल साहित्यकार के हृदय एवं मनोभाव होते हैं, जो उन्हें अपने समय, समाज एवं परिवेश से प्राप्त होते हैं। देश और काल से प्राप्त मानसिक निवेशों को जो रचनाकार पूर्ण ईमानदारी एवं जीवंतता के साथ सहज भाषा में व्यक्त कर पाते हैं, उन्हें ही कालजयी और कालजीवी होने का गौरव प्राप्त होता है। वे ही साहित्यकार हमेशा प्रासंगिक बने रहते हैं, जिनका अध्ययन किसी भी काल या परिवेश के लिए उपयोगी होता है। नि:संदेह एक ऐसी ही आवाज संपूर्ण भारतवर्ष के दिलों पर 'Voice of millennium' के रूप में अमिट छाप बिखेरी हुई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि असम में संगीत के सुर,ताल सब उन्हीं के नाम से शुरू होता है और उन्हीं के नाम से ख़त्म हो जाता है। विश्व भर में अनेक रिकॉर्ड कायम करने वाले अमूल्य रत्न डॉ. भूपेन हाजरिका और हिंदी साहित्य के अप्रतिम हस्ताक्षर बाबा नागार्जुन के मानव-कल्याण, मानव-प्रेम, सहानुभूति एवं दानवता के विरोधी कंठों के कलात्मक स्वरों ने संपूर्ण जनमानस में सामाजिक चेतना जागृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

2. विश्लेषण :

असमीया साहित्य एवं संस्कृति के धरोहर स्वरूप डॉ. भूपेन हाजरिका के गीत और हिंदी साहित्य के आधुनिकता-बोध एवं प्रगतिशील विचारधारा के पोषक, मानव जीवन के सभी पहलुओं पर दृष्टिपात कर उन सबको अपनी भावनाओं में पिरोकर कथा-साहित्य, कविता एवं गीत के रूप में हिंदी साहित्य प्रेमियों के सम्मुख रखने वाले, जन-जन की पीड़ा को आत्मसात् करने वाले बाबा नागार्जुन की रचनाओं का परिवेश समसामयिक होने के कारण उन रचनाओं में उस समाज का प्रतिफलित रूप देखने को मिलता है, जो स्वतंत्रता के इतने वर्षोपरांत भी अपरिवर्तित है। जिस समाज में शोषण का अंत होना अपेक्षित तो था, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं हो सका। इतना ही नहीं उस समाज में मानव-प्रेम, मानव-कल्याण, मानवता का जयगान, मानवीय दर्द-सहानुभूति, शोषित-पीढ़ित मानवता का उत्थान एवं मानवता की निरंतर अग्रगति और दानवता का विरोध कर शोषण मुक्त गणतांत्रिक समाज की स्थापना होते-होते रह गया। वस्तुत: जिस प्रकार एक उज्ज्वल नक्षत्र छोटे-बड़े का भेद-भाव न रखकर सभी को सामान रूप से प्रकाशित करता है, ठीक उसी प्रकार उदात्त कंठ से मुक्ति-आकांक्षी जनता को न्योता देने वाले डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों और कविताओं

और नागार्जुन की कविताओं में विभिन्न भावों के माध्यम से आम जनता के अन्तर्मन में व्याप्त मानवीय स्पंदन को महसूस किया जा सकता है।

डॉ. भूपेन हाजरिका ने समकालीन जीवन-यथार्थ और ऐतिहासिक सत्य को ही अपने संगीत में स्थान दिया है। इनके गीतों में लघु से लेकर गुरुमानव तक, बिंदु से लेकर सिंधु तक, जमीं से लेकर आसमान तक, रेगिस्तान से लेकर प्रशांत महासागर तक, मानव से लेकर दानव तथा देवता तक, नारी से लेकर पुरुष तक सभी की सशक्त अभिव्यक्ति मिली है।

हिंदी साहित्य के आधुनिककाल में छायावाद के बाद अत्यंत सशक्त साहित्यान्दोलन प्रगतिवाद है, जिसका मूलाधार सामाजिक यथार्थवाद रहा है। यहाँ सभी साहित्य प्रेमी इस बात से परिचित अवश्य होंगे कि प्रगतिवादी काव्य वह है, जो अतीत की संपूर्ण व्यवस्थाओं के प्रति रोष व्यक्त करते हुए उसके बदलाव की आवाज को बुलंद करता है। सही अर्थों में नागार्जुन जनता के ही कवि हैं, जिसके कारण उनकी रचनाओं और वास्तविक जीवन के साथ सामंजस्य है। इनकी कविताएँ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि पक्षों में एक बड़ा प्रश्न-चिह्न जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करती हैं।

आधुनिक कबीर नागार्जुन के लिए उनकी विचारधारा से कहीं अधिक बड़ी थी जनता की संवेदना। समाज के हर वर्ग को अपनी रचना में बिना किसी रुकावट के वही व्यक्ति अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है जो इस समस्या से जूझता हुआ आगे बढ़ा है। सच्चे अर्थों में कहा जाए तो नागार्जुन खुद को जनता के प्रति सचेत रूप से जवाबदेह समझते हैं। नागार्जुन की सचेत भावना को उनकी सच्चाई का नाम देना अनुचित नहीं होगा, जो उनकी 'प्रतिबद्ध हूँ' शीर्षक काव्य-रचना में देखी जा सकती है--

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ –

बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त-

संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ

अविवेकी भीड़ की भेड़ियाँ – धसान के खिलाफ

अंध-बधिर व्यक्तियों को सही राह बतलाने के लिए

अपने आप को भी व्यामोह से बारंबार उबरने की खातिर

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ शतधा प्रतिबद्ध हूँ।

(नागार्जुन 1975 : 93)

गौरतलब है कि नागार्जुन का संपूर्ण रचना-संसार इसी भावधारा से प्रतिबद्ध रहा है।

इनकी कविताएँ अपने समय के समग्र परिदृश्य की जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं।

नागार्जुन को अपनी बात कहने के लिए किसी सहारे की जरूरत नहीं पड़ती थी, बल्कि उन्होंने स्पष्ट और सीधी सच्ची शब्दों में व्यक्त किया है, जिसकी सुंदर अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है –

जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊं,

जनकवि हूँ साफ कहूँगा, क्यों कहलाऊं।

(शोभाकांत 1990: 63)

नागार्जुन की ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, जितनी उस समय थीं। नागार्जुन गाँव-गली की बात करते हैं और उस भाषा में करते हैं, जिस भाषा में भोली-भाली जनता समझ सके। ठीक उसी प्रकार डॉ. भूपेन हाजरिका की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

मानुहे मानुहर बाबे, यदिहे अकणो नाभाबे।

अकणि सहनुभूतिरे,भाबिब कोनेनो कोवाँ,

समानीय ?

(पाठक 2011 : 21)

आज के आधुनिक यांत्रिक युग में भी ये पंक्तियाँ उतनी ही प्रासंगिक हैं, क्योंकि हम कितने भी आधुनिक क्यों ना हो जाएँ- समाज के दुर्बल, असहाय व्यक्तियों की सहायता करना हमारा नैतिक दायित्व होना आवश्यक है। यहाँ कहने की आवश्यकता नहीं कि अपनी दूरदृष्टि एवं लोकमंगल की भावना से किस प्रकार जीवनकाल के तमाम कष्टों को इस असम-सूर्य ने अपने काव्य-जगत् पर कभी भी हावी नहीं होने दिया है, वे लोकजीवन को संस्कृतमय बनाने के लिए लगतार नए-नए शब्दों का सृजन करते रहे। अपने उद्देश्य को सम्मुख रखकर उन्होंने असमीया साहित्य, समाज एवं संस्कृति को जो नवीन रूप प्रदान किया, वह शायद ही कभी संभव ही।

गौरतलब है कि डॉ. भूपेन हाजरिका की यह लड़ाई हथियारों की लड़ाई नहीं, बल्कि आवाज की लड़ाई, विचार एवं शांति-कामना की लड़ाई है तथा अंत तक समाज को बचाने की लड़ाई है। विश्व के विभिन्न देशों और लोगों से मिलकर इन्होंने इस बात को भली-भाँति समझ लिया था कि समाज में मनुष्य ही मनुष्य को वह मानवीय मर्यादा दिला सकता है, जिसका वह हकदार है। उन्होंने धर्म की रक्षा, न्याय एवं अहिंसा की स्वतंत्र नीति जनमानस में भरकर आशा की उम्मीद प्रदान की। इतना ही नहीं, आपने अपने जीवन से हताश लोगों में आशा,

विपत्ति में घिरे लोगों को साहस तथा दुःखी जनों को स्नेह की थपकी भी लगाई है। इसकी सुंदर झाँकी उनके कई गीतों में देखा जा सकती है। कवि नागार्जुन ने भी अपने युगीन यथार्थ और समसामयिक चेतना को अपनी कविताओं से मुखरित किया है, जिनमें एक ओर तो गरीब, किसान, मजदूर शोषण के अनवरत चक्र में पिसते हुए दाने-दाने को मोहताज हैं, तो दूसरी ओर नकाबधारी भोग-विलास में लिप्त हैं-

> जमींदार है, साहूकार है, बनिया है, व्यापारी हैं,
>
> अंदर-अंदर विकट कसाई, बाहर खद्दरधारी हैं।
>
> (सक्सेना 1968:450)

दरअसल सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी शोषण और सामाजिक अत्याचार सहन करने के लिए बाध्य जनता के आर्थिक-सामाजिक उन्नयन के लिए नागार्जुन ने पूरजोर आवाज उठाई है जिसमें विश्वमानवतावाद, वसुधैव कुटुंबकम् वाली एक विशाल-व्यापक विश्वदृष्टि है। इन तमाम प्रयासों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किस प्रकार नागार्जुन ने सुंदर एवं रंगीन पृथ्वी की कामना की है। वस्तुत : आपने समाज में परिवर्तन लाने के लिए किसान को माध्यम तो बनाया ही है, साथ ही समाज से आधार ग्रहण कर उसे आम जनता के सामने लाने के लिए देश का भविष्य या कहे तो आने वाली नवीन पीढ़ी को भी तहे दिल से स्वागत किया है, जिसकी अमित झाँकी उनके 'यह दंतुरित मुस्कान' जैसे गीतों एवं कविताओं में देखी जा सकती है। उन्होंने न केवल अपनी कविता के माध्यम से बल्कि संपूर्ण साहित्य के माध्यम से समाज की स्थिति सामने लाकर किसानों की गाथा के रूप में एक नई समस्या एवं नई चेतना के माध्यम से संपूर्ण जनमानस को आलोकित करने का प्रयत्न किया है। इस संदर्भ में उनके आरंभिक दिनों की कविता 'उनको प्रणाम' और अंतिम दिनों की कविता 'अपने खेत में' आदि रचनाएँ देखी जा सकती हैं।

हिंदी साहित्य में इस तरह की विशेषता केवल गद्य विधा के दो महत्वपूर्ण लेखकों, आजादी के पूर्व के दौर में प्रेमचंद और आजादी के बाद के दौर में हरिशंकर परसाई में रेखांकित की जा सकती है। मूलतः नागार्जुन की रचनाओं में इस प्रकार की भावधारा प्रवाहित होने का कारण रहा है उनका काव्य-संघर्ष। नागार्जुन का काव्य-संघर्ष उनके जीवन-संघर्ष के बीच किसी 'अबूझ सी पहेली' का पर्दा नहीं है, मुक्तिबोध की कविताओं की विचारधारा की तरह, बल्कि उनका संघर्ष अंतर्द्वन्द्व, कसमसाहट और अनिश्चितता भरा संघर्ष न होकर इसके विपरीत निजी भावधारा बनकर प्रवाहित हुआ है। ठीक उसी प्रकार हाजरिका के विश्वभ्रातृत्वबोध से आपूरित मानवतावादी स्वर के

समाज-निर्माण की अद्‌भुत कला को नकारा नहीं जा सकता है। आपने असमीया, बंगला तथा हिंदी गीतों के द्वारा समाज में रहने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति की एक अद्‌भुत मिसाल कायम की है, जिसका सफल चित्रण इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

> आकाशी गंगा बिछरा नाइ – नाइ बिछरा स्वर्ण अलंकार,
>
> निष्ठुर जीवनर संग्राम बिछारो मरमर मात एषार।
>
> (हाजरिका 2015:64)

अर्थात् डॉ. भूपेन हाजरिका इन गीतों के माध्यम से स्पष्ट रूप से यह गुहार लगाते हैं कि मुझे आकाश गंगा नहीं चाहिए, सोने से बना अलंकार की भी माँग नहीं करता हूँ, बल्कि इस सांसारिक जीवन में सिर्फ और सिर्फ लोगों से सच्चे प्रेम की ही कामना करता हूँ। मनुष्य को समाज के अभिन्न अंग होने के नाते समाज से अनेक सहानुभूति एवं आशा की अपेक्षा रहती है। मनुष्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। अगर व्यक्ति है तो समाज है और समाज है तो व्यक्ति। यदि आदिमकाल की बात की जाए तो यह दृश्य सामने आता है कि आदिमकाल में मानव जब जंगलों में रहा होगा और जानवरों आदि से सुरक्षा के लिए समूह में रहना शुरू किया होगा, तब उसके लिए समाज में किसी एक व्यक्ति की समस्या पूरे समाज की समस्या रही होगी। परंतु यह तो सैकड़ों साल पुरानी और कल्पना की बात है। तब तो बात समझ आती थी कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। लेकिन जैसे-जैसे व्यक्ति के विकास की गति प्रवाहित हुई, व्यक्ति की अनेक जरूरतें बढ़ने लगीं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि विकास के इस दौर में व्यक्ति किस प्रकार समाज से अपने को दरकिनार करता चला गया। दरअसल में ऐसी स्थिति में वैचारिक उदारता एवं सामाजिक ओजस्विता की जो पृष्ठभूमि हिंदी साहित्य के लिए कबीरदास ने तैयार की, असमीया साहित्य एवं समाज के लिए जो शंकरदेव ने किया, वह अत्यंत उल्लेखनीय है। विघटनकारी तत्वों के दुष्प्रभावों से राष्ट्र को मुक्त करने कर लिए तत्कालीन स्थिति में जो आवश्यक एवं प्रभावकारी आदर्शवादी दृष्टि शंकरदेव ने असम में असमीया जनसमूह के लिए अपनाई थी, वह केवल तत्कालीन असम में ही नहीं, अपितु पूरे पूरोत्तर भारत में फ़ैल गई थी।

दरअसल में सहानुभति की यह आवश्यकता तभी संभव है, जब समाज में आपसी सद्भावना बनी रहे। तमाम जरूरतों पर दृष्टिपात करते हुए डॉ. हाजरिका ने जितने भी गीत गाए या गीतों का

सृजन किया है, उन सभी गीतों में केवल कला की ही अभिव्यक्ति ही नहीं, अपितु विपरीत परिस्थितियों में भी भारतवासियों को जगाने का अथक प्रयास भी है। उनके गीतों में निहित नारी शक्ति, आत्मनिर्भरता, मातृभूमि प्रेम, अतीत गौरव, राष्ट्र प्रेम, स्वाधीन भारत का चित्र जैसी विभिन्न विशेषताओं ने उन्हें पूरे विश्व के क्षितिज पर ला कर खड़ा कर दिया।

डॉ. भूपेन हाजरिका को यह विश्वास था कि नई पीढ़ी ही इस कार्य को सफल बनाने में सक्षम हो सकती है। इसलिए समाज में व्याप्त दुःख-दुर्गति, अन्याय-अविचार इत्यादि को दूर कर नए समाज गढ़ने का दायित्व आपने जाग्रत प्रहरी की भूमिका के रूप में स्त्री हो या पुरुष सबके कंधों पर सौंप दिया है; क्योंकि उनके सामने ऐसी कोई चुनौती नहीं जो पूर्ण ना हो सके। डॉ. भूपेन हाजरिका अपने इन परिवर्तन कामी विचारों पर पूर्णत: आश्वस्त थे। क्योंकि उन्हें यकीन था कि हथियार विहीन आवाज, विचार एवं शांति की यह लड़ाई अंत में समाज में व्याप्त विविध असंगतियों को मिटाकर नवीन समाज की प्रतिष्ठा कर सकती है। इसीलिए उन्होंने विचारों में बदलाव एवं चेतना को जागृत करने हेतु उदात्त कंठ से मुक्ति-आकांक्षी जनता को न्योता देने का जो संकल्प लिया था, वह परिवर्तन की दिशा में पहली सीढ़ी थी।

3. निष्कर्ष:

वैसे तो उज्ज्वल भविष्य की अनेक बाधा युक्त दिवारों के विपरीत एक तीव्र गति का संचालन करने वाले डॉ. भूपेन हाजरिका और नागार्जुन के गीत पूरे विश्व परिवार को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दिव्य मंत्र से उद्वेलित करते रहेंगे, आने वाली युवा पीढ़ी के लिए ये सदा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि सितार के ऊपर कई प्रमुख तार होते हैं और मिजराब से आघात करने पर उसमें से सुर निकलती है। इन प्रमुख तारों के नीचे भी कुछ तरब के तार भी लगी होते हैं, जिन्हें आमतौर पर अंग्रेजी में Sympathetic कहा जाता है। मुख्य तारों के सुर में इतनी प्रबलता और शुद्धि होती है कि उन्हीं के कारण तरब के तार अपने-आप झंकृत हो उठते हैं। ठीक उसी प्रकार डॉ. भूपेन हाजरिका और नागार्जुन- इन दोनों कवियों की रचनाओं में इतनी प्रबलता एवं शुद्धि है कि मनुष्य की आत्मा के तार को भी झंकृत कर देती है।

टिप्पणी:

प्रस्तुत पत्र में आवश्यकतानुसार भूपेन हाजरिका के गीतों का लिप्यंतरण किया गया है। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है।

ग्रंथ-सूची:

नागार्जुन. रचनावली. खंड -1. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1975.

पाठक, गौतम. असमीया संगीत और डॉ. भूपेन हाजरिका: समन्वय पूरोत्तर, अंक: 13, अक्टूबर-दिसंबर, 2011.

शोभाकांत.नागार्जुन : मेरे बाबूजी. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1990.

सक्सेना, द्वारिका. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1968.

हाजरिका, सूर्य, संपा. डॉ. भूपेन हाजरीकार गीत समग्र. तृतीय . गुवाहाटी: एस. एइच.शैक्षिक न्यास, 2015.

संपर्क-सूत्र :
शोध प्रज्ञा (दर्शन निष्णात)
हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय